



श्री जे कृष्णमूर्ति

मेरे नाथ !

आज के युग के महान विचारक श्री जे.कृष्णमूर्ति जी के साथ पूज्य स्वामी शरणानन्द जी की एक भेंट का प्रसंग -



वीतराग संत स्वामी शरणानन्द जी महाराज

दिल्ली में श्री कृष्णमूर्ति जी जहाँ ठहरे थे वहाँ श्री स्वामीजी महाराज पहुँचे । श्री कृष्णमूर्ति जी ने अत्यन्त आदर और स्नेह के साथ स्वामीजी का स्वागत किया तथा अपनी विशेष कुर्सी पर ही स्वामीजी को बैठाया स्वयं एक साधारण सी कुर्सी पर बैठ गए । दुभाषिए के माध्यम से बात-चीत आरम्भ हुई ।

श्री स्वामीजी महाराज ने कहा, " आप प्रत्येक बात का निषेध करते जाते हैं तो क्या आप अभाव को स्वीकार करते हैं ? "

श्री कृष्णमूर्ति जी ने तुरन्त कहा, " नहीं, नहीं लाइफ है लाइफ है ।" इस पर श्री महाराज जी ने कहा, " जिसे आप लाइफ (जीवन) कहते हैं उसे यदि मैं परमात्मा कहूँ तो आपको कोई आपत्ति है ? " सुनकर श्री कृष्णमूर्ति जी मौन हो गए उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। बाद में इस भेंट की चर्चा करते हुए श्री स्वामीजी महाराज ने बताया कि कृष्णमूर्ति जी ने जो अन्तिम पुस्तक लिखी है उसमें कहा है कि, प्रेम की जागृति में ही मानव-जीवन की पूर्णता है । तो भाई, प्रेम तो तभी होगा जब कोई प्रेमास्पद हो । इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने परमात्माकी सत्ताको ही स्वीकार किया है ।

- सन्त-जीवन-दर्पण पुस्तक से (page 69)

आज के युग में बड़े विचारक, जो परमात्मा और आत्मा की चर्चा ही नहीं करते, बल्कि निषेधात्मक बात करते हैं वे हैं - जे. कृष्ण मूर्ति । उन्होंने जो आखिरी किताब लिखी है, उसमे लिखा है कि - " प्रेम की जागृति ही मानव के विकास की चरम

सीमा है।" यानी प्रेम प्राप्ति मानव जीवन की चरम सीमा है। तो भैया ! प्रेम प्राप्ति तो तभी न होगी, जब कोई प्रेमास्पद होगा ? प्रेम-प्राप्ति बिना प्रेमास्पद के हो जायगी क्या ?

श्रोता - नहीं।

तो इस तरह से उन्होंने ने भी अपनी थीसिस में, अपनी खोज में परमात्मा की ओर संकेत किया है।

- सन्त-वाणी भाग-३ (page 145), Cassette No. 11B



www.swamisharnanandji.org